भोजपुरी माटी - द्वैमासिक भोजपुरी पत्रिका
अंक-10-11/अक्टूबर-नवम्बर-1985
पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद, 24-सी,
रवीन्द्र सरणी, कोलकाता.

भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व आ कृतित्व

☐ नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक'

[जन्म—१८-१२-१८८७ निधन—१०-७-१९७१]

[भिखारी ठाकुर के नांव भोजपुरी-साहित्य में ओह ऊँचाई पर पहुंच गइल बा, जहंवा तकला पर टोपी उलट जाला, बाकिर ऊँचाई के थाह ना लागे। पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद आ भोजपुरी माटी परिवार उहांके १४ वीं पुण्यतिथि पर एगो सादा - समारोह के आयोजन कके. आपन समस्त श्रद्धा सुमन अर्पित कइलस।

समारोह में ई निर्णय लिआइल, जे इहांका बारे में कुछ प्रमाणिक जानकारी भोजपुरी माटी का कृपालु पाठक लोगन के दिआव। काहे से कि देश आ विदेश से कई एक सज्जन के पत्र एह बारे में आइल रहे।

एकर भार, हिन्दी आ भोजपुरी के सुपरिचित युवा कथाकार, उपन्यासकार श्री नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' जे भोजपुरी माटी परिवार के एगो सदस्य हउअन आ पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद के सांस्कृतिक मंत्री हउअन पर दिआइल। ई, ५५ वर्षीय चन्दनपुर (सारण) निवासी श्री विश्वेश्वर ठाकुर जे लगभग ३० बरिस ले भिखारी ठाकुर के निकट रहल बाड़न, का सहयोग से कुछ प्रामाणिक जानकारी एकट्ठा कइलन ह। प्रेस में आवत-आवत कुछ देर हो गइल, एह से ई जुलाई-अगस्त अंक में ना जा सकल। कुछ विलम्ब से दिहला खातिर हम क्षमा-प्रार्थी बानी। एह लेख पर पाठक बन्धु आ विद्वान लोगन के प्रतिक्रिया सादर आमन्त्रित बा।]—प्रबन्ध सम्पादक

भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व आ कृतित्व अतना ना विशाल क्षेत्र घेरले बा, जे हमरा अइसन हलुक-पातर आदमी सोचते उभ-चुभ होखे लागल बा। उहां पर हम कलम चलावे के धृष्टता ना कर सकब। ई हम विद्वान लोगन पर छोड़त बानी। हँ, एह छोट मुट्ठी में, ओह विशाल सागर में से जवन भेंटा गइल बा, हम उलीच रहल बानी। हमरा सामने श्री विश्वेश्वर ठाकुर जी आपन पोथा-पतरा लेके बइठल बानी, हम ओही में से बांच के सुनावत बानी। एहमें अइसनो पन्ना बा जवन तीस-बत्तीस बरिस से सेंत के बाकस में बन्द रखला से चिथड़ा हो गइल बा इहो टो - टा के बांचत बानी।

त सुनीं, हम पहिले शुरु क रहल बानीं महा-पण्डित राहुल सांकृत्यान के विचार, जवन उहांका संवत २००५ में एगो बरसात का मौसम में भिखारी ठाकुर खातिर प्रगट कइले रहीं—" ... हमनी के बोली में केतना जोर हवे, केतना तेज बा, ई अपने सब भिखारी ठाकुर का नाटक में देखीले। लोग के काहे नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक?

काहे दस-दस, पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक देखे खातिर ? मालूम होता कि ऐही नाटक में पउलिक के रस आवेला जवन चीज में रस आवे उहे कविताई । .....भिखारी ठाकुर हमनी के अनगढ़ हीरा हवे । उनकरा में कुलि गुन बा ।"

[भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली से साभार]

हमरा सामने विश्वेश्वर ठाकुर जी बइठल बानीं । हम पूछनी—"ठाकुर जी, रउआ भिखारी ठाकुर का बारे में कुछ बताईं ?"

—"अरे साहब, हाथ कंगन को आरसी क्या ? उहांका आपन जीवनी खुदे लिखले बानी । हई देखीं !"—ठाकुर जी खइनी मलत 'भिखारी हरि कर्तन' सोझा धऽ दिहनी । हम पन्ना पलटत बानी

"...आरा जिला ममहर, ससुराल, फुफहर आरा जिला आरा पुरोहित गुरु आरा परिवार है । आरा जिला राजा दीवान छड़ीदार और, डाकघर बबूरो बहर गांवा में आधार है, थाना बड़हरा आरा छपरा का मध्यमांहि परत करीब चकिया मुकुटपुर बजार है । दहकर कुतुबपुर गांव बसल दियरा में तबहीं से भिखारी कहत छपरा प्रचार है ।"

[भिखारी हरि कीर्तन]

"जो भिखारी अनुचित कहेऊ, क्षमहु सकल सज्ञान
शब्द के कवि सम होई कहुं, कहें हम लघु नादान"
देवी जी की दया से नाम भइल चहुँ ओर ।
अति मतिमंद गवांर भिखारी, सब विधि से कमजोर।।

[बिरहा कलियुग बहार]

"—शुभ सम्वत १९४४ शाके ८०९ तदनुसार १९८५ फसली तथा १८८७ पौष मास, शुक्लपक्ष पंचमी सोमवार को बारह बजे दिन में मेरा जन्म हुआ । पिता का नाम दलसिंगार ठाकुर । हम दो भाई हैं—एक मैं एक बहोर ठाकुर ।

आठ वर्ष की उमर बेहोशी में बीता, नव वर्ष से जीवन चरित्र आरम्भ कर रहा हूं ।

जब मैं एकावन वर्ष का हुआ, तब जीवन-चरित्र का रचना किया । अब प्रेस में छपवाता हूं ।

॥ दोहा ॥

शुक्रवार शुभलग्न घड़ी, शुभ तारीख दुई पाँच ।
उनइस सौ एकतालीस को, दिया प्रेस में साँच ॥

जब मैं नव वर्ष का हुआ, तब विद्या पढ़ने के लिये पाठशाला पर गया । एक वर्ष तक रामगती लिखने नहीं आया, तब पढ़ना छोड़ दिया । मुझको चार गायें और उनके बच्चे थे । उनको चराने के लिए प्रतिदिन खेतों में ले जाया करता था । उसके बाद, अपना पेशा हजामत बनाने का सीख लिया तो विद्या पढ़ने की लालसा हुई । एक बनिये का लड़का जिसका नाम भगवान था, उन्हीं से हमने कहा कि 'हमको' पढ़ा दीजिए । तब उन्होंने हमको पढ़ा दिया । थोड़े ही समय में हमको लिखने-पढ़ने की समझ आ गई । रामायण की कथा में हमारा मन खूब लगता था । उसके बाद मेरी इच्छा हुई कि कमाने के लिये परदेश जायं तब मैं घर से भागकर खड़गपुर चला आया । वहीं हजामत बनाने लगा । वहां रात में रोज-रोज रामलीला होती थी और मैं भी देखने के लिये जाया करता था । जो कहता था कि मैं भी इसी तरह तमाशा करूँ । आषाढ़ महीना में रथ यात्रा में लोगों के साथ में मैं भी जगन्नाथपुरी चला गया । चन्दन तालाब में स्नान करके मैंने श्री ठाकुर जी का दर्शन किया । तब मैं समुद्र की लहर लेकर अकेले ही डेरे पर चला आया । और सब साथियों से संगति छूट गयी तब मैंने डेरे पर आकर एक साथी की गठरी खोली तो

उसमें रामायण थी। उसी को मैं पढ़ने लगा; तब मुझको कुछ समझ में आने लगा। तब मेरा मन तुलसीकृत रामायण में लग गया। ठाकुर-द्वार से खड़गपुर आकर कुछ दिन रहकर तब घर पर चला आया। साधु पण्डित या जिसके मुंह से गीत, कवित, छन्द, श्लोक अच्छा लगे अर्थ पूछकर सीखने लगा। और अपने अक्षर में लिखने लगा। उस समय हमारा विवाह हो गया था। रामलीला में व्यासजी उपदेश देते थे। सुनकर मेरा भी मन हुआ कि इसी तरह से मैं भी उपदेश देता। अपने साथियों से सलाह करके, कागज के कूट-मुकुट बनाकर गांव में रामलीला करना शुरू कर दिया। साथ ही साथ में श्रद्धापूर्वक उपदेश देने लगे। उस समय मेरी उम्र तीस वर्ष की थी। तब नाच का गिरोह बनाकर साटा लिखाकर मैं कुछ दाम कमाने लगा। मेरे माता-पिता मना करते थे कि तुम नाच में मत रहो। चिठ्ठी न्योतने के बहाने मैं नाच में चला जाता था। सट्टा मेरे द्वार पर नहीं लिखा जाता था। साथियों के यहां सट्टा लिखा जाता। इसलिए मेरा छल मेरे माता-पिता को मालूम नहीं होता था। राम-कृष्ण की जय बोलकर दोहा-चौपाई कहते मैं उपदेश देने लगा। नाचने - गाने और बजाने का हाल मैं कुछ नहीं जानता हूं। राम - कृष्ण शब्द की कृपा से मेरा नाम फैल गया। मेरा गुरुमन्त्र भगवान जी का है। मेरी जन्मभूमि कुतुबपुर है। पहले मेरा गांव आरा जिला में था। मेरा ममहर, फुफहर, ससुराल, स्वजाति के राजा, दीवान, छड़ीदार, पुरोहित, गुरु पोस्ट थाना ये सब आरा जिला में थे। गंगाजी से दबकर मेरा गांव दियरे में चला आया। तब से छपरा जिला में कहाने लगे। १३६४ का भादो में मेरा बस्ती दहकर दियार चला आया है।

चौपाई

निजपुर में करिके रामलीला
नाचके तब बन्हली सिलसिला।
तीस बरस के उमर भइल
बेधलस खूब कलिकाल के भइल।
नाच मण्डली के धरि साथा
लेक्चर दिहीं जब कहि रघुनाथ॥
बरजत रहल बाप महतारी
नाच में तू मत रह भिखारी।
चुपे चाप करि नाच में जाईं
बात बनाकर दाम कमाईं॥
केहू सराहे केहू कोसे
केहू जमाव, कहे अबहूँ से॥
तनिको गावे न आवे बजावे
काहे दो लागल लोग का भावे
राम शब्द जय कहिके
सभा खुस करी नाच में रहिके।
केवल राम नाम कहि ज्ञानी,
दूसर इष्ट मोर आदि भवानी।
राम प्रताप भइल यश नामा,
कहत भिखारी दास हजामा।

[भिखारी हरि कीर्तन]

किताब बन्द कके हम विश्वेश्वर ठाकुर का ओर मुखातिब भइनी—"ठाकुर जी, ई त मोटा-मोटी बात भइल इहां का बारे में, अच्छा ई बताईं रउआ इहां के कब से जानत बानीं ?"

—"जब से अँखफोर भइनी।"

—"माने ?"

—"भिखारी ठाकुर नाच-गाना में रहस, ई उनुकर बाप-महतारी ना चाहत रहस। बाकिर ऊ चोरी-छुपे आपन गरोह बान्ह लिहलें। उनुकर दू जने संघतिया रहस, बाबूराम ठाकुर आ महेन्दर ठाकुर। बाबूराम ठाकुर सारंगी बजावस आ महेन्दर ठाकुर हरमुनिया। ई लोग हमार चचेरा भाई रहे लोग, हमार बाबू बली ठाकुर ठेकइता रहस। भिखारी ठाकुर बेसी भाग हमरे द्वार पर रहस (ग्राम—चन्दनपुर, पो० रामपुरकला, जि० सारण)। इहे लोग नाच के साटा करे लोग। एहसे हम बचपने से इहांके साथ में रहीं।"

—"भिखारी ठाकुर नाच में का करस ?"

—"नाच में पाठ करस आ गावस।"

—"कवन पाठ ?"

—"जइसे 'कृष्णलीला' में जसोदा मइया, 'बेटी बेचवा' में पंडित जी, 'बिदेसी' में बटोही, 'गोबर-घिचोर' में पंच आउर जब जइसन जरुरत होखे मरद भा जनाना के पाठ करस।"

—"जनाना के पाठ ?"

—(हँसि के) "हं जी, अतना ना सुन्नर रहस जे जनाना बन जास त, केहू चिन्हबे ना करे जे ई असल जनाना ना हउअन।"

—"अच्छा ! इयाद पड़ल, हमहूँ एगो बात सुनले रहीं, एगो बात बतावत बानी। हम लइका रहीं तब के सुनल बात ह। ··· एक बेर के बात ह, ऊ अबहीं खूब जवान रहस। त ऊ का कइलन जे ऊ खूब सजके जनाना बनलें. आ सांझी खानी अपना माई का पासे गइलें आ कहलें जे हम एगो दुखिया जनाना हईं। ससुरा से भाग के नइहर जात बानी, हे मतवा अब बेरा डूबत बा। राहता में चोर चाईं के डर बा। अपने रात भर हमरा के रहे दिहीं। उनकर माई अपने लगे रात भर रखली, खिअवली - पिअवली, बाकिर ना चिन्हली जे ई उनकरे बेटा हउअन। होत भिनसहरे जब फराकित होखे के भइल, त भिखारी ठाकुर आपन सिंगार-पटार खोल के माई का सामने ध दिहले। उनकर माई ई देख के अचरज में पड़ गइली। आ ओही समय आशीष दिहली जे जा बबुआ अब तहार पीठ केहू ना लगाई। ··· बाकिर उनकर बाबू एह नाच वाला धन्धा से खुश ना रहस ···।"

—"हंजी, सुनले त हमहूं रहीं।"—ठाकुर जी कहलन।

—"अच्छा ई बताईं, उहांका अपना नाच में जवन नाटक करीं, ऊ उहेंके लिखल रहे ना दोसरो के लिखल ?"

—"ना साहेब, उहेंका लिखीं सब। पहिले अपना अक्खर में लिखीं, फेरू कवनो ईस्कुलिया लइकन से साफ-साफ लिखवाईं। फेरू ऊ छपाव। तब समाजी लोगन के ऊ किताब दिआव। ओही किताब से इयाद कके पाठ होखे।"

—"माने, उहांके सब रचना, उहेंका जिनिगी में छाप गइल रहे ?"

—"करीब-करीब सब।"

—"कतना किताब होई ?"

—"ठीक त इयाद नइखे। बाकिर लगभग ३४ गो लीला रहे।" ऊ आपन माथा खजुआवत कहलें।

—"ठीक-ठीक पता कहंवा लागी ?"

—"ठीक - ठीक पता लागी उहंवा का पोता दिनकर दयाल जी से। उहे अब 'भिखारी-आश्रम' चलावत बारन।"

—"उहांके लइका फइका ?"

—"भिखारी ठाकुर के दू जने बेटा। एक जने त मरि गइलन। उनकर कवनो बंश-बरखा नइखे। दूसरका जाना शीलानाथ ठाकुर के तीन गो लइका बारन। राजेन्द्र, हीरालाल आ दिनकर दयाल ठाकुर। दिनकर दयाल ठाकुरो लिखेलें। इहे अब 'भिखारी-आश्रम' के देखभाल करेलें।"

—"ई 'भिखारी-आश्रम' कहां बा आ इहवां कइसे जाइल जा सकेला ?"

—"'भिखारी-आश्रम' इहांका गांवे पर बनल बा। मो० कुतुबपुर दियर, पो० गोल्डेन गंज, जि० सारण। जाये खातिर—छपरा कचहरी का बाद, गोल्डेनगंज रेलवे स्टेशन उतर के रिक्शा से भा पैदल लाल बाजार होते हुए खलपुरा घाट १० मिनट में पहुँच जायेब। उहंवा से नौका से पार कके कुतुबपुर दियर ओहिजा बा 'भिखारी - आश्रम'। इहंवा उहांका बारे में, किताबन का बारे में सब सही-सही जानकारी मिल जाई।"

—"भिखारी ठाकुर के घर दुआर त अब खूबे नीमन बन गइल होई ?"

—"ना कहां बनल बा। उहे पुरनका माटी के घर बा।"

—"काहे ? उहांका त अपना जिनगी में बहुते कमाइले रहनी हं।"

—"कमइला से का होई। उहांका आपन कमाई समाजी लोगन में जादे बांट देत रहनी। आ कुछ रुपया घरहुँ देत रहीं। बाकिर घरो के लोग कुछ ना क सकल। आ उंहाका त रहले रहीं एकदम से साधु-त्यागी पुरुष। अच्छा त अब हमार छुट्टी करीं।"

—"धन्यवाद ठाकुर जी। राउर ढेर समय लिहनीं।"

श्री विश्वेश्वर ठाकुर चल गइनी। अब हमरा सामने भिखारी ठाकुर का किताबन के ढेर लागल बा। हम एक-एक कके सब पढ़ रहल बानी। पढ़ला पर लागत बा उहांके रचना रस से त ओत-प्रोत बड़ले बा, बाकिर सबसे बड़का अचरज ई बा जे उहांके ई कृति उहांके एगो मुक्त संत का रूप में स्थापित कर रहल बा। सब रचना में अध्यात्म का गूढ़ रहस्य के अत्यन्त सहज रूप में व्याख्या कइल बा। हो सकत बा, हमरा अइसन अलपबुद्धि उहांका साहित्य के ठीक-ठीक ना समझ सकल होखो। बाकिर हमार निहोरा बा जे विद्वान सभे भोजपुरी साहित्य में रूचि लेके, एकर ओह स्तर पर मूल्यांकन करीं। भिखारी ठाकुर एगो नचनियां ना रहस एगो संत परम्परा के कवि आ दार्शनिक रहस।

—देखीं उहांका 'बिदेसिया' में सूत्रधार का कह रहल बाड़न—"आज विदेसी के तमासा होइहन। विदेसी के तमासा काहे ? दूर-दूर के लोग कहेला जे विदेसिया के नाच देखे चले के। बिदेसिया के नाच ना हवन. विदेसिया के तमासा हवन। एह तमाशा में चार आदमी के पाट बा। —बिदेसी एक, प्यारी सुंदरी दू, बटोही तीन, रखेलिन चार।

अथवा बिदेसी ब्रह्म; बटोही धरम, रखेलिन माया, प्यारी सुन्दरी जीव। ब्रह्म जीव दूनो जाना एही देह में बाड़न बाकी भेंट ना होखे, कारन ? माया। एकरा के काटे वाला बटोही धरम।"

ठाकुर भिखारी के साहित्य

१—विदेसिया
२—भाई बिरोध
३—बेटी वियोग
४—कलियुग प्रेम
५—राधेश्याम-बहार

प्रकाशक :—लोक कलाकार भिखारी
ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर (सारण)
१६७६ (संग्रह प्रकाशन)

६—श्री गंगा-स्नान नाटक
७—पुत्र-वध नाटक
८—विधवा विलाप नाटक
६—ननद भौजाई सम्वाद

मुद्रक व प्रकाशक :—
श्री लोकनाथ पुस्तकालय
१७३, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७
(प्रकाशन समय १६५१)

१०—देव कीर्तन या भिखारी चौयुगी
११—देवता विलाप
१२—भिखारी भजन-माला
१३—भिखारी हरि कीर्तन

मुद्रक व प्रकाशक :—
श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस,
६३, सूतापट्टी, कलकत्ता-७
(प्रकाशन समय १६५१-१६५८)

१४—बिरहा कलियुग बहार

श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस
६३, जमुना लाल बाजज स्ट्रीट, कलकत्ता-७

१५—माताभक्ती बुढ़शाला
१६—राधेश्याम बहार
१७—श्री गंगा दहार

मुद्रक व प्रकाशक :—
श्री दूधनाध पुस्तकालय एण्ड प्रेस लि०
सलकिया (हवड़ा)
(प्रकाशन—१६५१)

१८—नर नव अवतार (२८-६-१६६०)
१६—राम नाम माला (२२-८-१६५६)

प्रकाशक :
भिखारी ठाकुर
मो०—कुतुबपुर
पो०—कोटवापटी (रामपुर)
जि०—सारण
छपाई :—गंगाप्रेस (छपरा)

★

—सत्यम-निवास
५१/५६, नेताजी सुभाष रोड
पो० रिसड़ा—७१२२४८ जि०, हुगली (प० बं०)

—०—

स्मारिका (पत्रिका)
भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध-संस्थान, आरा (बिहार)

भिखारी ठाकुर नाट्य परम्परा के जीवित धरोहर, लोक संस्कृति अवरू भोजपुरी भाषा के जीवंत बनावें खातिर दिन-रात लागल रहेवाला, आपन गुरूजी स्वर्गवासी प्रातः स्मरणीय आदरणीय भिखारी ठाकुर के विचारन के गीत आ नाटक के माध्यम से जन-जन तक पहुँचावे वालु अभिनयकर्त्ता श्री रामाज्ञा राम जी से बात-चीत पर आधारित कुछ अनछुअल प्रश्न जिन्हें भिखारी ठाकुर महोत्सव-2006 पर स्मारिका हेतु जारी कइल गइल बा।

साक्षात्कारकर्त्ताः-
डॉ० दिनेश प्रसाद सिन्हा
एम० एस० सी० द्वय, पी एच-डी, एल० एल० बी०
वनस्पति विज्ञान विभाग, जे० जे० कॉलेज आरा

श्री रामाज्ञा राम जी

जीवन-परिचय

नाम	-	रामाज्ञा राम
पिता	-	स्व० निरपत राम
पता	-	ग्राम- डुमरिया, पो०-बिसुनपुर डुमरिया, थाना - कोइलवर, जिला - भोजपुर, आरा
उम्र	-	95 वर्ष
लम्बाई	-	चार फीट पाँच इंच
रंग	-	गेहुँआ
पहनावा	-	कुरता धोती
भाषा	-	केवल भोजपुरी बोले के ज्ञान
शिक्षा	-	अनपढ़
संतान	-	प्रथम - श्री सुदर्शन प्रसाद - सत्तर वर्ष, टाटा कारखाना से अ० प्राप्त द्वितीय - श्री सुमन प्रसाद - साठ वर्ष, मिलिट्री से अ० प्राप्त
पत्नी	-	श्रीमती दरबी देवी, चालीस वर्ष पूर्व दिवंगत।
आजीविका	-	मलिक साहब के गुन के बखान - गीत नाटक द्वारा, लगन में साटा के माध्यम से
संगत	-	बीस बरीस के उमिर से मलिक जी के साथे हो गइनी आ उनके से गीत आ नाच, नाटक के गुर सिखनी।
दैनिक कार्यक्रम	-	केवल भोजपुरी भाषा के विकास अवरू मलिक जी के विचारन के जनता में घुम-घुम के सुनाइला। हमार दोसरा कवनो काम नइखें।

प्रश्न - भिखारी ठाकुर जी के कब से जानत बानी आ साथे बानी?

उत्तर - देखीं, हम अपन गुरू जी के नाम ना धरीं। उनका के सम्मान देवे खातिर मलिक जी कहींला। कमसीन रहीं तब मलिक जी के गाना आ नाटक के प्रतिभा देख के साथे जुड़ गइनी आ गुरू मान लेनी। हमरा में जवन भी कला बा आज गुरू जी कृपा के फल बा।

मलिक जी जब कवनो स्टेज पर जात रहन तब उनकर बात आ नाटक देख के लोग भाव विभोर हो जाते रहे, कतना लोग त पूका फाड़के रोये लागत रहे। सारा जमात के लागत रहे की हमरे बेटी के विदाई हो रहल बा, हमार मरद नशइल होके सारा धन बरबाद करत बा आदि आदि। गजब के दृश्य उत्पन्न हो जात रहे।

प्रश्न - अनपढ़ भिखारी ठाकुर में अतना बढ़िया नाट्य कला कइसे आइल?

उत्तर - हमरा त इहे बुझात बा की सरस्वती जी के बास मलिक जी के जीभ प रहे, या नाटक करे के बेरा प आ के बैइठ जात रहीं। न त एक से एक कथा, चौपाई आ रामायण, कृष्णलीला लगातार कइसे सुनावत रहीं उहो गा के बढ़िया स्वर में। एगो निपढ़ आदमी के का हस्ती बा, सब भगवान के कृपा से होत रहे। मलिक जी के जिनगी में गुरू के रूप में कुतुबपुर निवासी भगवान साह जी अइनी। उहें के गाय चरावें के समय ककहरा के ज्ञान करवनी जहवा से गीत के स्वर फूटल।

गीत में मन के भाव -
पढ़े लिखे के हाल ना जानी, राखी पद शारदा भवानी
मात पिता के पद शिर नाई, लिखनी शुरू होत बा भाई
नव बरस के जब हम भइनी, विद्या पठन पाठ पर गइनी
एक बरस तक बगदल मती, लिखहूँ न आवें रामागति
बनिया गुरू नाम भगवाना, उहे ककहरा सात पढ़ाना

प्रश्न - ठाकुर जी के बढ़िया नाटक कौन बा?

उत्तर - हमरा त कृष्णलीला, बिदेशिया आ बेटी बियोग सबसे बढ़िया तमाशा लागेला आ ऐही के सगरो देखावल भी जात रहे। कृष्णलीला में यशोदा जी से कृष्ण के शिकायत करत गोपिया -

हम ना बसब तहरा नगरी ए यशोदा ....
मोहन जी धुरी में फाना उडावेलन, नित बेसाहत बाड़न रगरी
अबही त इ चरचा घरही चलत बा, जान जइहें दुनिया भर सगरी
कहे भिखारी बढ़ाई होई ऐही में, नंद जी के बड़का बा पगरी हमना ......,..............

विदेशिया में आपन मरद के खोजे खातिर बटोही से दुख के कइसे बयान करत बाडी -

सुन हो गोसइयां लगाव पार नइया से, मोर दुख देखिल नेतर से बटोहिया
जब तू जइबऽ ओही देश देखिल नीके कलेश, रचि रचि हलिया सुनइह बटोहिया
नइहर में इअवा त्याग देलन पिअवा, असमन जनिह की घीअवा बटोहिया

बेटी वियोग - बेटी बिदाई में भाव गीत -

जामते मइया माहुर देके काहे ना देलू मारी,
नाहक हमरा के पालन करे में सासत सहलू भारी
दूध पियाके तेल लगाके काया देलू सवारी
बानी बालक उमर के थोरा नइखे बुध बिचारी
जो कुछ चूक होई हमसें माफ करहूँ महतारी
कहत भिखारी मत द मइया घर से हमें निकारी।

अपान पिता से दुख के बेयान करत लड़की -

श्री गणेशाय नम: भई गइनी काल हम, पूर्व में कवन कसूर कइनी बाबूजी जे ही लागी आज हम दुनिया से भइनी कम, बर देख के घर ना सुहात बा हो बाबू जी। गिरीजा कुमार कर दुखवा हमार हर, ढर ढर ढरकत बा लोर मोरे बाबूजी। पढ़ल गुनल भूल भइल, समदल भेड़ा भइल, सौदा बेसाहे में ढ़गइल हो बाबूजी।

प्रश्न - भिखारी जी के प्रतिभा देखे खातिर दस-कोस से लोग आवत रहे?

उत्तर - मलिक जी के तमाशा हर मरद - औरत लोग के जुबान पर चढ़ल रहे। पहिलही शोर हो जात रहे कि हई गाँव आ अमुक दिन भिखारी के मंडली आई। एकरा खातिर त लोग आपन खाना के तैयारी, साँच बात बा की लोग सातू बांध के चलत रहे। काहे की बारात पार्टी या तिलक पार्टी के भी खाना ना मिलत रहें, ओहू से अलग

बगात रहे की केहू उनकर तमाशा छोड़ के जाइले ना चाहत रहे। आलम के त ठेकाने ना रहत रहे। कतना लोग त पेड पर चढ़के रात भर देखे में मशगूल रहत रहे आ भिनुसहरा तक मजलिस जमल रहत रहे। ओह घरी त न माइक रहे ना जेनरेटर तवनो पर हजारन के भीड़ आनन्द उठावत रहे। आज अइसन कवनो पुलिस आ फोर्स भी ना रहे केवल रहे त लोग के आपन उस्ताद के कला देखे के ललक।

प्रश्न - भिखारी ठाकुर के नाट्य परम्परा रऊआ बाद कइसे चली?

उत्तर - हमरा जतना ताकत आ बुद्धि बा हम त मंडली के सब लोग के सिखावत रहीं ला, आ उनकर बिचार से जोड़े के प्रयास करीला - मलिक जी हमनी के समाज में फैलल कुरीती - जइसे तिलक दहेज के कारण लड़कियन के अनमेल शादी, दहेज लोभियन पर करारा प्रहार, धन लोलुप भाई लोग के करामात, पर स्त्री के मोह जाल में फँस के सब कुछ बरबादी, शराब के लत सें सब कुछ लुटावत, धरम के नाम पर लूट-पाट आदि आदि कुरीती पर गीत के माध्यम से जनता के सामने रखत रही, आ वास्तव में समाज में दिन-रात घटना आँख से दिखाई पड़त रहे ओकरा के मिटावे खातिर मलिक जी बिचार करे के कहत रहीं। अभी के गीत आ नाटक समाज में भ्रष्टाचार बढ़ावे खातिर नुस्खा देत बा, चोरी करेके, बैंक लूटे के, हत्या करेके, बलात्कार करेके, धन कमाये के नायाब तरीका, कानून के आँख में धूर झोंके के सिखावत बा, अपहरण करे के, शराब, गुटका आ फैसन के चकाचौंध मे सब्जबाग दिखा के सब लूटे के प्रयास हो रहल बा। एह से फिल्मी दुनिया के लोग मालामाल हो रहल बा जबकि हमनी के उहे कलाकार आपन परम्परा निभावें में बरबाद हो रहल बा लेकिन हमनी भिरी सच्चाई बा उ लोग के पास आडंबर बा, हमनी के पाडंव बानी त फिल्मी दुनिया भीरी कौरव के समूह बा। जरूरत बा की हमनी के कलाकार के मान-सम्मान दीहींजा, कलाकार के नजर से देखी जा हमनी के गाँव गवई में कला देखावत बानी त नचनिया-बजनिया- ऊ लोग सिनेमा के पर्दा पर नाच, गाना दिखावत बाड़न त हीरो। इ भेद ना होखे के चाहीं । हमनी के आपन भाषा आ संस्कृति के बचावे के प्रयास करत बानी, विकास के बात सोचत बानी जब की तथाकथित हीरो लोग बिदेश में फैलल अशलीलता के नकल करके देश के डुबावे में लागल बाड़न। बताईं हमनी के भाषा आ संस्कृति खतम हो जाई त हमनी के कौन गली के रह जाइब जा - कइसे बाबू कुँवर सिंह, कइसे आल्हा उदल के लोरकाई गाइब जा, कइसे आपन मिट्टी के राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, आरण्य माई; भगवान महावीर आ बुद्ध के याद करब जा? हमनी के जनम केवल रुपया कमाये खातिर नइखे भइल बल्कि सामाजिक दायित्व निबाहे खातिर भी बा। इहे मलिक साहब के सोच रहे आ इहे सोच के भोजपुर वासी लोग के जन-जन तक पहुँचावे के पड़ी ना त परम्परा समाप्त हो जाई।

प्रश्न - भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान के बारे में आपन बिचार कहीं।

उत्तर - देखीं हम बहुत खुस बानी के इ संस्था हमार गुरूजी के बराबर याद करत रहेला, पटेल पड़ाव पर जमीन के उपाय करके मूर्त्ति बनवलस, खूब बड़ चैता के आयोजन जवना में पन्द्रह बीस गोल जुटेला रात भर चैता होला ओह लोग के पुरस्कार, प्रमाण-पत्र बाद्यय यंत्र देके विदाई होला, होली मिलन के माध्यम से समरस समाज बनावे के संदेश देला, जयन्ती अवरू पुण्य तिथि पर चार दिवसीय कार्यक्रम चलेला जवना में - कई नाटक के मंचन होला, सब भोजपुरी गायक लोग आपन गीत सुनावे लन स्कूली बच्चा लोग के भाषण प्रतियोगिता, विद्वान लोग द्वारा समसामयिक विषय पर गम्भीर चर्चा होला, महान समीक्षक आ आलोचक कवि लेखक द्वारा अच्छा-अच्छा विचार जनता के बीच जाला, पत्र पत्रिका, अखबार आदि के माध्यम से भोजपुरी भाषा आ जिला के विकास खातिर प्रयास होला साथ ही जन प्रतिनिधि, नेता, जिला प्रशासन के सहयोग से एह सब के गति देवे खातिर प्रयास होला - इ सब के चलते हम हृदय से संस्था के धन्यवाद देत बानी खास करे एकर अध्यक्ष वरीय पत्रकार नरेन्द्र बाबू के, जेकरा के भगवान सूरज चाँद जइसन चमकावत रहस ताकि हमार मलिक साहब के साथे-साथे भोजपुरी भाषा आ लोक संस्कृति के विकास होत रहे। जइसे मलिक जी देश के कोना - कोना में जाके भोजपुरी आ आरा जिला के झंडा गड़लन ओसही इ संस्था के देश विदेश में फैलाव होखे इहे हमार अंतिम इच्छा बा।

❀❀❀